संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

वर्ष : १२३ ● अंक-२० ● १४ मई २०१६ वैशाख शुक्ल पक्ष दशमी संवत् २०७६ ● दयानन्दाब्द १६६ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३१२०

आर्य समाज का चिन्तन सदैव राष्ट्र हितैषी रहेगा

-डॉ० धीरज सिंह, सभा प्रधान

वाणी-पाणि के सदुपयोग से जीवन का व्यक्तित्व निर्मित होता है

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, सभा मंत्री

मेरठ-आर्य समाज शास्त्री नगर मेरठ का वार्षिक सम्मेलन ३,४,५ मई को सम्पन्न हुआ ५ मई को समापन समारोह में सभा प्रधान डा० धीरज सिंह जी द्वारा प्रेषित सन्देश में बताया कि आर्य समाज ही मात्र ऐसी संस्था है जिसका चिन्तन सदैव राष्ट्र हितैषी रहा है क्योंकि महर्षि दयानन्द जी का चिन्तन वेदों पर आधारित था- ''माता भूमि पुत्रो- अहं पृथिव्याः'' इस भारत देश की भूमि मेरी माता है और हम सब इसके पुत्र हैं संसार में कोई देश नहीं जिसे माता कहकर पुकारा जाता हो अंग्रेजी बोलने वाले भी जब इसकी प्रसंशा करते हैं तब ''मदर इण्डिया'' कहते हैं ऐसे देश में हम पैदा हुए हैं हम निश्चित सौभाग्शाली हैं आर्य समाज के माध्यम से ही देश स्वतन्त्र हुआ सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने समापन सत्र पर अपना उद्बोधन देते हुए मेरठ की आर्य जनता एवं आर्य समाजों के अधिकारों का उत्साहवर्धन करते हुए उनकी कार्यक्रम की सफलता पर प्रशंसा की।

मेरठ की प्रत्येक आर्य समाजों के सम्मेलन अच्छी उपस्थिति में होते हैं वक्ता-विद्वान् भी अच्छे ही बुलाये जाते है मेरठ में स्वयं भी वैदिक विद्वानों की प्रचुरता है श्री डा० वेदपाल जी श्री वीरेन्द्र रत्नम जी, श्री डा० महावीर जी, श्री डा० ओमदत्त जी, श्री डा० वेद प्रकाश जी, श्री स्वामी चन्द्र देव जी, श्री म० आर्यमुनि जी, आचार्य रणधीर शास्त्री जी, आचार्य वाचस्पति जी, आचार्य प्रमोद कुमार जी, आचार्य कुलदीप जी आर्य, श्री सन्दीप जी आर्यगेल जो मेरठ नगर में ही निवास करते हैं। तथा मेरठ नगर के अति निकट गुरूकुल प्रभात आश्रम है जहां पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज का आशीर्वाद मेरठवासियों को सुलभ रहता है फिर भी हरयाणा से कु० कल्याणी आर्या तथा डा० निष्ठा विद्यालंकार को बुलाकर जो जागृति पैदा की है वह प्रशंसनीय है। अपने विचारों को प्रकट करते हुए बताया कि वाणी और पाणि का जो भी सदुपयोग करता है उसका स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है और समृद्धि बढ़ती जाती है वाणी से मधुरभाषण, मधुर व्यवहार तथा स्वाद की अपेक्षा स्वास्थ्य हेतु भोजन करने का संकल्प जो भी पूरा करता है उसे कोई बीमारी नहीं आ सकती पाणि=हाथ, कर्मशीलता, कर्मठता, सदैव जागरूकता और अपनों को साथ लेकर चलना अपने परिवार और समाज तथा राष्ट्र को समृद्धिशाली बनाना पाणि द्वारा ही सम्भव है आज इसकी महती आवश्यकता अनुभव की जा रही है। आश्रम व्यवस्था को समाज की उन्नति का मूलकेन्द्र मानकर पालन करें वर्ण व्यवस्था का प्रचार-प्रसार करें जाति मूलक व्यवस्था से समाज और राष्ट्र कमजोर होता है वर्ण व्यवस्था से सुदृढ़ता प्राप्त होती है आज के परिवेश में आप साक्षात् अनुभव कर सकते हैं। सरकार बनाने के लिए गठबन्धन में जाति मूलक विचारों ने नेताओं की नींद समाप्त कर दी है और परिणाम आने तक चिन्तित हैं यह चिन्ता बढ़ती ही जायेगी जब तक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के विचारों के अनुरूप समाज का कायाकल्प नहीं करेंगे। यह उत्तरदायित्व आर्यसमाज के ऊपर आ गया है हम सब मिलकर उसे पूरा करने का संकल्प लेगें ऐसा मुझे पूर्णविश्वास है। सभा मञ्च पर वैदिक विद्वान् वीरेन्द्र रत्नम् जी स्वामी ओमदत्त जी, महात्मा आर्यमुनि जी, जिला सभा अध्यक्ष विद्यासागर आर्य मन्त्री श्री जिले सिंह आग्र भी शोभायमान थे म० प्रकाशमुनि जी म० बालमुनि जी तथा डा० महावीर जी भी शोभाबढ़ा रहे थे समाज के अधिकारियों ने सभी विद्वानों का शाल उढ़ाकर सम्मान किया समाज के प्रशासक मुकेश आर्य का योगदान विशेष रहा उनके साथ सहयोगी सदस्य जगदीश परमार-रामावतार आर्य, कुंवर पाल सिंह, सत्यपाल सिंह, व्रजपाल वर्मा, विजेन्द्र राणा, श्री वीरेन्द्र आर्य ने संयोजन किया तथा इं. वीरेन्द्र सिंह, रवीन्द्र सिंह, मनीष सिंह, देवेन्द्र शिशोदिया, रत्नेश आर्या, उर्मिला रस्तोगी, दीपा आर्या, ऊषा सोलकीं, सत्यपाल

आर्य, राजेन्द्र पुरोहित, भरत सिंह राठी, धर्मवीर शर्मा, उदयवीर सिंह, वेद प्रकाश, दिनेश कक्कड़, दिनेश कक्कड़, सुशील गुप्ता, मेरठ नगर की समाजों के अधिकारियों ने उपस्थित होकर जो शोभा बढ़ाई वह भी प्रशंसनीय रही सर्वश्री राजेश सेठी, माता कैलाश सोमी, डा० आर०पी० सिंह, आनन्द प्रकाश आर्य, राम सिंह जाखड़ रामपाल सिंह एडवोकेट, अशोक सुधाकर, मुकेश आर्य, वेदराम आर्य, आदि-आदि सभी समाजों के अधिकारी भी उपस्थित रहे माताओं की संख्या अच्छी थी बाद में ऋषि लंगार के रूप में भण्डारे का आयोजन किया गया भोजन की प्रशंसा सभी ने की कार्यक्रम सुन्दर सफल रहा।

—रणधीर कुमार शास्त्री, वेद प्रचार, अधिष्ठाता

अन्तरंगाधिवेशन की सूचना

संस्था के पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है, कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, (नारायण स्वामी भवन), 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ की आगामी अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक- 09 जून, 2019 दिन रविवार तद्नु ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी को पूर्वाह्न 11.00 बजे से संस्था प्रधान-डॉ0 धीरज सिंह की अध्यक्षता में महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़तल्ला, नैनीताल में सम्पन्न होगी, जिसमें आप सभी की उपस्थिति प्रार्थनीय एवं अनिवार्य है।

प्रवेशनीय विषयगत एजेण्डा पंजीकृत डाक द्वारा सभी पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों को भेजे जा रहे हैं।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती- सभा मंत्री

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

स्वार्थों के आधार पर हो रही धर्म की व्याख्या

देश की वर्तमान राजनैतिक एवं धार्मिक सोच में सकारत्मक परिवर्तन की आवश्यकता है। राजनीति से जुड़ा व्यक्ति अपने आपको धर्म–निरपेक्ष कहने में गौरव का अनुभव करता है। लेकिन वह भूल जाता है कि कोई भी व्यक्ति, धर्म रहित हो ही नहीं सकता, धर्म मात्र मठ, मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारा जाने का ही नाम नहीं है। धर्म उन नियमों, मर्यादाओं एवं मूल्यों का नाम है– जिन पर चलकर व्यक्ति, परिवार, राष्ट्र एवं विश्व में सुख, शांति एवं समृद्धि आती है। अपने दायित्वों एवं कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक निर्वहन धर्म है। धर्म निरपेक्षता का अर्थ अलग–अलग धार्मिक एवं आध्यात्मिक आस्थाएं रखने वाले लोगों को अपमानित करना या उन पर निरंकुश प्रहार करना भी नहीं है, या फिर किसी बहुसंख्यक समाज को गाली देकर किसी अल्पसंख्यक समाज का हितचिंतक या पोषक कहलाना भी नहीं यद्यपि भाषा विज्ञान की दृष्टि से धर्म निरपेक्ष शब्द अर्थविहीन है क्योंकि कोई भी व्यक्ति, वस्तु या पदार्थ धर्म सापेक्ष होता है, धर्म निरपेक्ष नहीं।

यह विडम्बना ही है कि हमने पूजा–पाठ की वाह्य प्रक्रिया को ही धर्म घोषित कर दिया और पूरी दुनियाँ में आज धर्म के नाम पर भ्रम, पाखण्ड, नफरत, धर्म–परिवर्तन जैसे कार्य ही अधिकांश संचालित हो रहे हैं। यदि विश्व के इतिहास पर दृष्टि डालें तो पता चलेगा, दुनिया में दो हजार साल पहले कोई मठ, मंदिर, मस्जिद या गिरजाघर नहीं था। लगभग दो हजार वर्ष से पूर्व यहां पुराण, कुरान या बाइबिल का ज्ञान नहीं था। पाँच हजार वर्ष पूर्व गीता का ज्ञान और नौ लाख वर्ष पूर्व रामायण तक की पुस्तक नहीं थी तो क्या इससे पूर्व धर्म नहीं था? भारतीय संस्कृति का इतिहास लाखों वर्ष पुराना है और तब भारत के मनीषियों ने जीवन मूल्यों को ही धर्म की संज्ञा दी थी।

महर्षि मनु में धैर्य, क्षमा, संयम, शौच, इंद्रिय–निग्रह, विद्या, सत्य व अक्रोध को धर्म कहा है। अहिंसा, सत्य, समता, संतोष एवं विश्वव्यापी बन्धुत्व को भुलाकर बाह्य कर्मकांड को ही हम धर्म मान बैठे हैं। जैसे धर्म–निरपेक्ष शब्द अर्थविहीन है वैसे ही धर्म–परिर्तन शब्द भी अर्थ विहीन है क्योंकि जब सत्य, अहिंसा, त्याग, प्रेम, सौहार्द, सहिष्णुता, सेवा व परोपकार धर्म है तो फिर क्या अर्थ है धर्म–परिवर्तन का? यदि धर्म–परिवर्तन से जीवन मूल्यों का सरोकार नहीं है तो फिर धर्म के नाम पर आरक्षण का स्वार्थ छोड़ परमार्थ करने के लिए प्रेरित करता है फिर धर्म के नाम पर आरक्षण का स्वार्थ छोड़ परमार्थ करने के लिए प्रेरित करता है फिर धर्म के नाम पर आरक्षण का स्वार्थ एवं भेदभाव का व्यवहार क्यों? धर्म के नाम पर षड्यंत्र एवं विवाद देश की प्रगति में बाधा है। अतः देश की विविध धार्मिक आस्थाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले लोगों को भी चाहिए कि धर्म की व्याख्या स्वार्थों के आधार पर न करें। धर्म एवं जाति के नाम पर समाज का विभाजन राष्ट्रीय–एकता एवं अखंडता के लिए खतरनाक है। दुर्भाग्य से देश के संविधान में धर्म, जाति एवं जनजाति के नाम पर जो व्यवस्थाएं दी गई हैं, राजनेताओं ने उनका दुरुपयोग कर समाज को विभाजित ही किया है। हमें अपने निहित स्वार्थों से ऊपर उठकर, अपनी पहचान जातियों, मजहबों एवं वर्गों के आधार पर निर्मित नहीं करनी चाहिए। यद्यपि आप्त–पुरुषों/ऋषियों के प्रमाणों में संशय नहीं करना चाहिए। परन्तु सम्भव है कि धर्म वह नहीं हो जो कि धर्मगुरु, पण्डित, ग्रन्थी, मुल्ला–मोलवी या पादरी आदि द्वारा व्याख्या किया जा रहा हो, वह धर्म के नाम पर भ्रम या धोखा हो सकता है। इन तथाकथित धर्मगुरुओं के निजी स्वार्थ, आग्रह, अज्ञान या अंधकार तुम्हें सत्य से परिचित नहीं होने देंगे। और यदि तुम स्वयं भी आग्रह, स्वार्थ, अहंकार या अज्ञान के वशीभूत होकर धर्म की व्याख्या करने लगते हो तो तुम भी सत्य से परिचित नहीं हो पाओगे। अतः आग्रह रहित होकर ज्ञान–विज्ञान एवं आत्मज्ञान के आलोक में धर्म, सत्य एवं शुभ की तलाश करो। बाहर के सब गुरु व शास्त्र तुम्हें परावलम्बी बनाते हैं। अतः हमारे तत्वदृष्टा कहते हैं कि तुम स्वयं गुरु बनो। धर्म, सत्य एवं परमात्मा की तलाश भीतर से करो। भारतीयता हमारी पहचान, मानवता हमारा धर्म एवं मनुष्य हमारी जाति है। इस भाव से जीते हुए, अपने कर्म को ही हम पूजा मानें।

–सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ नवमसमुल्लासारम्भः

अथ विद्याऽविद्याबन्धमोक्षविषयान् व्याख्यास्यामः

प्रश्न– जीव मुक्ति को प्राप्त होकर पुनः जन्म मरण दुःख में कभी आते हें वा नहीं? क्योंकि–

न च पुनरावर्त्तते न च पुनरावर्त्तत इति।। उपनिषद्वचनम्।।
अनावृत्तिः शब्दादनावृत्तिः शब्दात्।। शारीरक सूत्र।।
यद् गत्वा न निवर्त्तन्ते तद्धाम परमं मम।। भगवद्गीता।।

इत्यादि वचनों से विदित होता है कि मुक्ति वही है कि जिससे निवृत्त होकर पुनः संसार में कभी नहीं आता।

उत्तर– यह बात ठीक नहीं, क्योंकि वेद में इस बात का निषेध किया है–

कस्य नूनं कतमस्यामृतानां मनामहे चारू देवस्य नाम।
को नो मह्या अदितये पुनर्दात् पितरं च दृशेयं मातरं च।।१।।
अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम।
स नो मह्या अदितये पुनर्दात् पितरं च दृशेयं मातरं च।।२।।

–ऋ० मं० १। सू० २४। मं०१।२।।

इदानीमिवसर्वत्र नात्यन्तोच्छेदः।। –सांख्य सूत्र।।

प्रश्न– हम लोग किस का नाम पवित्र जानें? कौन नाशरहित पदार्थों के मध्य में वर्त्तमान देव सदा प्रकाशस्वरूप है। हमको मुक्ति का सुख भुगा कर पुनः इस संसार में जन्म देता और माता तथा पिता का दर्शन कराता है। वही परमात्मा मुक्ति की व्यवस्था करता सबका स्वामी है।।२।।

जैसे इस समय बन्ध मुक्त जीव हैं वैसे ही सर्वदा रहते हैं, अत्यन्त विच्छेद बन्ध मुक्ति का कभी नहीं होता किन्तु बन्ध और मुक्ति सदा नहीं रहती।

प्रश्न– तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्गः।

दुःखजन्मप्रवृत्तिदोषमिथ्याज्ञानानामुत्तरोत्तरापाये तदनन्तरापायादपवर्गः।। –न्यायसूत्र

जो दुःख का अत्यन्त विच्छेद होता है वही मुक्ति कहाती है क्योंकि जब मिथ्याज्ञान अविद्या, लोभादि दोष, विषय, दुष्ट व्यसनों में प्रवृत्ति, जन्म और दुःख का उत्तर–उत्तर के छूटने से पूर्व–पूर्व के निवृत्त होने ही से मोक्ष होता है जो कि सदा बना रहता है।

उत्तर– यह आवश्यक नहीं है कि अत्यन्त शब्द अत्यन्ताभाव ही का नाम होवे। जैसे 'अत्यन्तं दुःखमत्यन्तं सुखं चास्य वर्त्तते' बहुत दुःख और बहुत सुख इस मनुष्य को है। इससे यही विदित होता है कि इसको बहुत सुख वा दुःख है। इसी प्रकार यहां भी अत्यन्त शब्द का अर्थ जानना चाहिये।

प्रश्न– जो मुक्ति से भी जीव फिर आता है तो वह कितने समय तक मुक्ति में रहता है?

उत्तर– ते ब्रह्मलोके ह परान्तकाले परामृतात् परिमुच्यन्ति सर्वे। – यह मुण्डक उपनिषत् का वचन है।

वे मुक्त जीव मुक्ति में प्राप्त होके ब्रह्म में आनन्द को तब तक भोग के पुनः महाकल्प के पश्चात् मुक्ति सुख को छोड़ के संसार में आते हैं। इसकी संख्या यह है कि तेंतालीस लाख बीस सहस्त्र वर्षों की एक चतुर्युगी, दो सहस्त्र चतुर्युगियों का एक अहोरात्र, ऐसे तीस अहोरात्रों का एक महीना, ऐसे बारह महीनों का एक वर्ष, ऐसे शत वर्षों का परान्तकाल होता है। इसको गणित की रीति से यथावत् समझ लीजिए। इतना समय मुक्ति में सुख भोगने का है।

प्रश्न– सब संसार और ग्रन्थकरों का यही मत है कि जिससे पुनः जन्म मरण में कभी न आवें।

उत्तर– यह बात कभी नहीं हो सकती क्योंकि प्रथम तो जीव का सामर्थ्य शरीरादि पदार्थ और साधन परिमित हैं पुनः उसका फल अनन्त कैसे हो सकता है? अनन्त आनन्द का भोगने का असीम सामर्थ्य, कर्म और साधन जीवों में नहीं, इसलिये अनन्त सुख नहीं भोग सकते। जिन के साधन अनित्य हैं उनका फल नित्य कभी नहीं हो सकता। और जो मुक्ति में से कोई भी लौट कर जीव इस संसार में न आवे तो संसार का उच्छेद अर्थात् जीव निश्शेष हो जाने चाहिये।

प्रश्न– जितने जीव मुक्त होते हैं उतने ईश्वर नये उत्पन्न करके संसार में रख देता है इसलिये निश्शेष नहीं होते।

उत्तर– जो ऐसा होवे तो जीव अनित्य हो जायें क्योंकि जिसकी उत्पत्ति होती है उसका नाश अवश्य होता है फिर तुम्हारे मतानुसार मुक्ति पाकर भी विनष्ट हो जायें। मुक्ति अनित्य हो गई और मुक्ति के स्थान में बहुत सा भीड़ भड़क्का हो जायेगा क्योंकि वहां आगम अधिक और व्यय कुछ भी हनीं होने से बढ़ती का पारावार न रहेगा और दुःख के अनुभव के बिना सुख कुछ भी नहीं हो सकता।

जैसे कटु न हो तो मधुर क्या, जो मधुर न हो तो कटु क्या कहावे? क्योंकि एक स्वाद के एक रस के विरुद्ध होने से दोनों की परीक्षा होती है। जैसे कोई मनुष्य मीठा मधुर ही खाता पीता जाय उसको वैसा सुख नहीं होता जैसा सब प्रकार के रसों के भोगने वाले को होता है।

और जो ईश्वर अन्त वाले कर्मों का अनन्त फल देवे तो उसका न्याय नष्ट हो जाय। जो जितना भार उठा सके उतना उसपर धरना बुद्धिमानों का काम है। जैसे एक मन भर उठाने वाले के शिर पर दश मन धरने से भार धरने वाले की निन्दा होती है वैसे अल्पज्ञ अल्प सामर्थ्य वाले जीव पर अनन्त सुख का भार धरना ईश्वर के लिए ठीक नहीं।

और जो परमेश्वर नये जीव उत्पन्न करता है तो जिस कारण से उत्पन्न होते हैं वह चूक जायेगा। क्योंकि चाहैं कितना ही बड़ा धनकोश हो परन्तु जिस में व्यय है और आय नहीं उसका कभी न कभी दिवाला निकल ही जाता है। इसलिये यही व्यवस्था ठीक है कि मुक्ति में जाना वहां से पुनः आना ही अच्छा है। क्या थोड़े से कारागार से जन्मकारागार दण्ड, काले पानी अथवा फांसी को कोई अच्छा मानता है? जब वहां से आना ही न हो तो जन्म कारागार से इतना ही अन्तर है कि वहां मजूरी नहीं करनी पड़ती और ब्रह्म में लय होना समुद्र में डूब मरना है।

क्रमशः

धरोहर

वेद व्याकरण के अद्वितीय विद्वान्

आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ६८३७४०२१६२

आर्य समाज के इतिहास के स्वर्णिम, विद्वत् समाज के लिए प्रेरणा पुञ्ज, सादगी सरलता की प्रतिमूर्ति, अपनी ऊहा से श्रोताओं के मन में विचित्र उत्सुकता पैदा करने वाले, धोती–कुर्ता, उत्तरीय से भारतीय वेशभूषा का प्रतिनिधित्व करने वाले, भाषण कला में ओजस्वी वक्ता, आर्य विद्वान्, आर्य उपदेशक, आर्य नेता के रूप में प्रतिष्ठत आचार्यों के आचार्य, उपदेशकों के गुरू, नेताओं के प्रेरणा पुरुष सभी का समवेत रूप थे आचार्य विश्वबन्धु जी शास्त्री।

आपके नाम को सुनते ही आर्य सज्जनों में उनके प्रति श्रद्धा के भाव पैदा हो जाते थे। उनके आते ही आर्य संस्थाओं के वार्षिक सम्मेलनों में चार चाँद लग जाते थे जब आप अपनी सिंह गर्जना करते थे आबाल वृद्ध आपके भाषण से प्रभावित हुआ करते थे कभी जनता को उन्मना नहीं होने देते थे काव्य रसों का आस्वादन करते रहते थे। सर्व प्रथम आपका नाम अध्यापन काल में ही सुन लिया था स्वामी सर्वदानन्द साधु आश्रम अलीगढ़ के विषय में जब भी चर्चा होती आचार्य जी का नाम विशेष रूप से लिया जाता था गुरूकुलों के मानों वे आदर्श पुरुष थे उनका नाम लेकर गुरुजन पढ़ने की प्रेरणा दिया स्वामी जी वीतराग सन्यासी थे श्री पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु धुवानन्द जी, श्री पं. शिवकुमार शास्त्री के बाद ही आपका वहां के मुख्य स्नातकों में लिया जाता है आपके सान्निध्य में कई कार्यक्रमों में साथ रहने का एवं आशीर्वाद लेने का सौभाग्य प्राप्त किया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की वार्षिक निर्वाचन आर्य समाज खालापार सहारनपुर में वर्ष १९६८ में हुआ था उसमें मुझे भी जाने का अवसर मिला मैं उस पूरे घटनाक्रम का साक्षी रहा और प्रथम बार निर्वाचन के क्रम को निकटता से देखा श्री आचार्य शिव कुमार शास्त्री जो लोकसभा सदस्य भी रह चुके थे उनके सामने चुनाव मैदान में आ गए मतदान के पश्चात् विजयी हुए श्री शिवकुमार शास्त्री जी के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लिया वातावरण भावुक हो गया था। छोटे भाई ने अपने बड़े भ्राता को पराजित किया और शालीनता में आशीर्वाद भी लिया उसके पश्चात् श्री शिवकुमार जी शास्त्री ने भाषण दिया था वह स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है प्रो० कैलाशनाथ सिंह सभामंत्री पद पर मनोनीत हुए थे वेद प्रचार का कार्य पूरे प्रदेश में जितना उस समय हुआ उतना आज तक किसी के भी कार्यकाल में नहीं हुआ आर्य भजनोपदेशकों की मण्डली ग्राम–ग्राम घूमकर प्रचार करते थे गुरूकुल सिरसागंज देखा था कि स्वामी योगानन्द जी वेदप्रचार के अधिष्ठाता थे साथ रहकर प्रचार कार्यक्रम को गाते थे। यह आज के अधिकारियों के लिए चिन्तन का विषय हैं।

आप स्वयं वेद प्रचारार्थ पूरे देश में जाते थे परायण यज्ञों में भी आप प्रायः यजमान को निराश नहीं करते थे आपके भाषण की कुछ झलक वर्तमान में श्री पं० वेदप्रकाश जी श्रोत्रिय वैदिक विद्वान के भाषणों में दिखाई देती है यथा १. मजदूर वह है जो मजे से दूर हो २. सफल जो फल सहित हो। ३. खोपड़ी=जिसमें खोई पड़ी है पुरानी बहुत स्मृतियां। ४. मुरादाबाद= जहां मुरादें आबाद होती हों ५. कितने पास हो=दयानन्द के आस–पास हूँ इसप्रकार के विचित्र व्याख्या में सुनकर लोग अति आश्चर्य युक्त हो जाया करते थे आपका ओजस्वी एवं तेजस्वी मुखमण्डल, गम्भीर वाणी, प्रत्येक श्रोता को प्रभावित करती थी आपकी युक्तियाँ आप के प्रमाण आपकी कुशाग्र बुद्धि भाषणों में स्पष्ट रूपेण दिखाई देती थी भावभंगिमा भी उसकी शोभा को बढ़ा दिया करती थी आपके भाषण के बीच में किसी की हिम्मत नहीं होती थी कि कोई बात कर ले या उठकर चला जाये मुझे आपके साथ कई कार्यक्रमों में साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मुरादाबाद आर्य समाज हरथला के प्रधान श्री रामप्रसाद जी आर्य आपके पुत्र सन्तोष आर्य सहित ३ भाई हैं। घर पर अर्थववेद पारायण यज्ञ किया था ब्रह्मा आचार्य जी थे मेरे साथ ब्र० वेदपाठी थे मैं भी यदा कदा सहयोग कर दिया करता था एक सप्ताह का पूरा लाभ उठाया गया आप जब वेद मन्त्रों की व्याख्या करते थे तब कुछ नयापन ही अनुभव होता था कई बार कुछ सज्जन कहते कि थोड़ा समय आ० धर्मपाल जी को भी दिया करें तो अच्छा रहेगा तो वे कहते थे समय आने दो जरूर दूँगा। वे फिर भूल जाते थे एक अधिकारी थे तनेजा जी आचार्य जी जैसे बोलने लगे तो उन्होंने कुछ कान में कहा तो वे आवेश में आकर बोले कभी तो शान्त होकर बैठ जाया कर हर समय तने जा–तने जा ऊपर को ही तनता जा रहा है वह व्यक्ति इतना शर्मिन्दा हुआ कि फिर कुछ कहने की हिम्मत नहीं पड़ी। आपने अथर्ववेद के मन्त्रों की व्याख्या के प्रसंग में बताया था कि वेद भगवान् के मन्त्रों की व्याख्या के प्रसंग में बताया था कि वेद भगवान् स्वयं कहते हैं कि आप यदि यज्ञ कर रहे हैं तो व्रात्य विद्वान् अतिथि आ जाये उसका उठकर सम्मान करो पूरा एक प्रकरण ही व्रात्य पर है।

एक बार गुरूकुल के प्रबन्धक और जिला सभा मुरादाबाद के मन्त्री मा० रामस्वरूप सिंह जी की पुत्री का विवाह संस्कार ग्राम भवालपुर वांसली में था हम सभी गए हुए थे तत्कालीन सांसद चौ० चन्द्र पाल सिंह जी अमरोहा जो उ०प्र० सरकार में दुग्ध मन्त्री भी रहे हैं गुरूकुल ततारपुर के अध्यक्ष थे वे भी उपस्थित थे आचार्य विश्वबन्धु जी शास्त्री को संस्कार के लिए हरिद्वार से बुलाया था लेकिन समस्या निकट हो गई कि संस्कार विधि उनके पास नहीं थी घर पर देखी नहीं मिली उनकी बड़ी पुत्री सरस्वती आर्या आचार्य सुमेधा जी के साथ पढ़ती थी उस पर भी नहीं मिली उस समय तक गुरूकुल चोटीपुरा की स्थापना नहीं हुई थी अब क्या हो? बात मेरे सामने आई मैंने कहा कि आचार्य जी हम स्वामी मुनीश्वरानन्द जी के शिष्य हैं हमें पूरा विवाह संस्कार कण्ठस्थ है आप व्याख्या करते (हम) और हम मन्त्र विधि का पाठ करेंगे। आचार्य जी अति प्रसन्न हुए और बोले ऐसे भी आचार्य हैं जिन्हें ८ मन्त्र अर्थ सहित याद नहीं रहते स्वस्तिवाचन– शान्तिकरण की तो बात ही पृथक् है। संस्कार दिन में ही था लगभग ३ घण्टे तक सांसद जी बैठे रहे और बोले भाई आज पहली बार विवाह संस्कार इतना अच्छी तरह से सुना और देखा है अब मैं भी अपने बच्चों के विवाह संस्कार में आपको ही बुलाया करूंगा और वास्तव में ऐसा ही हुआ उनकी बड़ी पुत्री को छोड़कर उसका पहले ही संस्कार हो गया था शेष सभी पुत्रियों और पुत्रों के विवाह संस्कार मेरे द्वारा ही सम्पन्न कराये हैं वे बच्चे जब भी मिलते हैं आज भी याद करते हैं। एक संस्कार में तो तत्कालीन हरयाणा के मुख्यमंत्री श्री चौ० देवीलाल जी भी आये थे उनके साथ ही श्री मुलायम सिंह जी भी थे काफी देर तक साथ–साथ बैठने और बातें सुनने का अवसर मिला था यह आचार्य विश्वबन्धु जी की व्याख्या का ही उनपर प्रभाव पड़ा जिसका हमें भी बाद में लाभ मिलता रहा आज वे बातें भूतकाल में होकर भी वर्तमान जैसी अनुभव हो रही हैं समय बलवान् है। आचार्य जी स्वस्थ्य के प्रति बहुत ध्यान रखते थे दोपहर के भोजन के बाद अमरूद खाते थे और कहते थे कि मेरा अनुभव है जिसे स्वस्थ्य रहना हो वह मध्याह्न २ अमरूद जरूर खाये विटामिन भी मिलेगा और भूख भी लगेगी पेट भी साफ होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रधान होने पर आपने वेद प्रचार के कार्यक्रम को पूरे प्रदेश में युद्ध स्तर पर आरम्भ किया उनके कार्यकाल में वेद प्रचार स्वामी योगानन्द जी गुरूकुल गंगीरी अलीगढ़ थे कई भजन मण्डली साथ लेकर एक तरफ से प्रत्येक जिले को पार करते हुए दूसरे कोने तक अभियान राजनीति में चुनाव की तरह चलाया गया था एक बार गुरूकुल सिरसागंज में पूरा काफिला आया था जब हम वहीं पर उत्सव में गए हुए थे सभा ने गाड़ी भी वेद प्रचार रथ के रूप में पहली ही बार खरीदी थी फिर वह प्रो० कैलाशनाथ सिंह जी के पास आ गई थी और काफी दिनों तक प्रचारकार्य उत्तमरीति से चलाया गया। आचार्य जी उपदेशक वृत्ति के विद्वान् थे आपका जन्म स्थान साधु आश्रम से पश्चिमी दिशा में उखलाना बड़ा ग्राम था वहीं से साधु आश्रम में पढ़कर स्वामी सर्वदानन्द जी सरस्वती के गुणों से युक्त होकर आर्य समाज का कार्य करने का संकल्प लिया था कभी किसी ने कितनी दक्षिणा दी है उस लिफाफे को घर आकर ही देखते थे जैसा भी होता वैसा ही खर्च चलाते रहे।

एक बार आचार्य जी प्रचार कार्य से घर लौटे अचानक हृदयाघात होने से उनका निधन हो गया वैदिक विद्वान् हमेशा के लिए हमसे विदा हो गए यह एक दुर्भाग्यपूर्ण क्षण था।

आर्य समाज का हीरा आर्य समाज के लिए समर्पित रहा और उसे अपना जीवन निर्वाह के लिए भी आर्य समाज व्यवस्था नहीं कर सका वे चाहते आज के उपदेशकों की तरह कोठी बना लेते प्रधान बनकर ऐश्वर्यशाली बन सकते थे पर "न्यायात्पथः–प्रविचलिन्त पदं धीराः" वे न्याय के मार्ग पर चलकर महर्षि का अमर सेनानी वेद प्रचार करते करते शहीद हो गया। ऐसे वीर पुंगव वैदिक विद्वान् के प्रति सादर श्रद्धांजलि प्रभो हमें भी उनके जैसी लगन और ऊहा प्रदान करो।

बढ़ते अज्ञान व अंधविश्वास का क्या होगा?

विकास आर्य

आज सारी दुनिया में अनेकों मतानुयायी गर्व व अभिमान के साथ अपनी जाति व पंथों के संरक्षण तथा प्रचार–प्रसार करने में अग्रसर हैं। इसके साथ ही हर कोई राज्यसत्ता प्राप्त कर अपने पंथ या जाति का प्रसार सारी दुनियां में करना चाहता है। जब से ये प्रवृत्ति बढ़ती गयी, तबसे धर्म के नाम पर नरसंहार, अत्याचार, अनाचार बढ़ते ही जा रहे है। संसार का इतिहास इसका साक्षी है। हर एक मत व पन्थ के धर्मग्रन्थ भी अलग–अलग बनवाये गये। हर एक मत व पन्थ के धर्मग्रंथ भी अलग–अलग बनवाये गये। हर एक मतानुयायी अपने–अपने ग्रन्थों पर दृढ़ विश्वास रखता है। वह अपने ही मत के अनुसार दूसरों को बनाना चाहता है। इसके लिए साम, दाम, दंड, भेद इन नीतियों का प्रयोग भी वह कर रहा है। जब इनके धर्मग्रंथ के अथवा पंथ विरोध के विरोध में किसी ने कुछ कहा या लिखा, तो उसे वे मृत्युदण्ड देने अथवा मार डालने जैसे कुकृत्यों को अपनाते हैं। आज भी इसका प्रत्यय बड़े पैमाने पर दिखाई दे रहा है। सभी ने धार्मिक भावनाओं का अपना सुरक्षाकवच बना रखा है। धर्म या धर्मग्रंथ के विरोध में किसी ने कुछ टिप्पणी की अथवा विचार प्रकट किये, तो 'धार्मिक भावनाओं को ठेंस पहुंचाई' ऐसा आरोप लगाकर उसे दंड दिया जाता है। इसी धार्मिक भावना का सुरक्षाकवच आजकल के राजनेता तथा शासक लोग भी पहन रहे हैं और इस बात को न्यायालय तक ले जा रहे हैं।

सभी धार्मिक (पंथवादी) लोग कहते हैं कि, हमें मानवमात्र को सुखी करना है, सभी को शांति प्रदान करनी है, किन्तु ऐसा होता कुछ विपरीत ही है। आज मानव दिन–प्रतिदिन अनेकों समस्याओं से घिरा हुआ नजर आ रहा है। वह दुःखी, अशांत और कष्टमय जीव बिताता दिखाई दे रहा है। इसका कारण क्या है यह जानना आवश्यक है। अलग–अलग पंथों ने अपने–अपने क्षेत्र पर राज्य किया और कर रहे हैं, किन्तु वहां पर भी उनके धार्मिक राज्य में आपसी संघर्ष व लड़ाइयाँ पहले होती थी और आज भी जारी हैं।

इस्लामिक देशों में आज आपस में कितने ही झगड़े चल रहे हैं। भारत से अलग होने के बाद पाकिस्तान व बांग्लादेश इन दो इस्लामिक देशों में संघर्ष होता रहा। एक विचार के होने पर भी इनमें आपसी झगड़े क्यों बढ़ रहे है? ऐसा क्यों हुआ, इसका कारण ढूँढ़ना आवश्यक है। भारतवर्ष में हिन्दुओं का राज्य होते हुए भी अनेकों राजा व संस्थानिक आपस में लड़ते रहे। आज श्री नरेंद्र मोदीजी की सरकार 'अच्छे दिन व सबका विकास' के नारे लगाकर सत्ता में आयी है। इनके ही अनुयायी आजकल हिंदू राष्ट्र बनाने की सोच रहे हैं। महाभारत में जो भाइयों का संघर्ष आपस में हुआ, जिससे सारे विश्व का नुकसान हुआ। यह क्यों हुआ? यह युद्ध अपने पंथियों या पंथियों के साथ हुआ? इन सभी समस्याओं का सही समाधान भारत के प्राचीन ग्रंथ वेद तथा सृष्टिक्रम के आधार पर महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपने सत्यार्थ प्रकाश व वेदभाष्य आदि ग्रंथों में दिया है। उनकी इन रचनाओं का उद्देश्य भी यही रहा है।

वेद और सृष्टि के नियम नित्य व शाश्वत नियमों को दर्शाते हैं। वहाँ पर केवल सत्यज्ञान ही विद्यमान है। सत्य के बिना दुनिया का पूर्ण कल्याण नहीं हो सकता और न ही किसी को सुख की प्राप्ति हो सकेगी। शास्त्र भी यही कहते हैं कि, अज्ञान ही सभी दुःखों का कारण है तथा अंधविश्वास के कारण ही सर्वत्र दुर्दिन आते हैं। ऋषि दयानंद ने इसके लिए सत्य की कसौटियाँ निम्न रूप से दी हैं।

१. वेद सब सत्य विधाओं की पुस्तक है।

२. सत्य यह सार्वभौम होता है।

३. सत्य व्यक्ति, देश या कालसापेक्ष नहीं होता।

४. सत्य सदैव सबके सर्वकाल कल्याण का होता है।

५. सत्य यह सृष्टि के क्रमानुसार होता है।

महाभारत के पश्चात बीच के काल में तथाकथित विद्वानों ने वेदों को तो मान लिया किंतु व उसके अर्थ मनगढ़न्त लगा दिये और फिर आचरण भी गलत करना शुरु किया। इसके परिणाम स्वरूप ही मत–मतांतर बढ़ते गए। ईश्वर व धर्म के नाम पर व्यक्तिपूजा, हिंसा आदि शुरु हुए। आज भी सभी मत वा पंथवादी लोग पूरी तरह से अज्ञान में हैं। इसलिए न तो वे सुखी है और न ही उनके अनुयायी या सामान्य जनता सुखी है? सभी के सभी दुःखी नजर आ रहे हैं। ईश्वर व धर्म के नाम पर आजकल के बढ़ते झगडे बहुत ही चिंता का विषय हैं। इनका मूल कारण अज्ञान व अंधविश्वास ही है। स्वामी दयानन्द जी ने इन्हीं दोषों के निवारण हेतु अपना पूरा जीवन लगाया तथा कठोर परिश्रम के पश्चात वेदज्ञान का 'सत्यार्थ प्रकाश' किया। उन्होंने सत्य व शाश्वत ज्ञान को दुनिया के सामने रखा और डंके की चोट के साथ कहा– सिवा वेदज्ञान के किसी का भी कल्याण नहीं हो सकता।'

वेदज्ञान के साथ सृष्टि की व्यवस्था भी शाश्वत है। इन दोनों की रचना परमात्मा ने जीवात्मा के कल्याण के लिए की है। तब वेद व सृष्टि का उपयोग आत्मा के कल्याण के लिए ही है। तब वेद व सृष्टि का उपयोग आत्मा के कल्याण के लिए ही करना चाहिए। इसीलिए महर्षि दयानन्द ने वेदों के अर्थ आत्मकल्याण हेतु लगाये हैं। सृष्टि में आज भी ईश्वर, जीवात्मा, धर्म, सुख की इच्छा, दुःख की अनिच्छा करने वाला प्रत्यक्ष है। जब ये सभी प्रत्यक्ष हैं, तो ईश्वर, धर्म आदि के बारे में अनेक मत–मतांतर उत्पन्न होने का मतलब ही अज्ञान व अंधविश्वास है।

सम्प्रति संसार में ईश्वर को माननेवाले (आस्तिक) तथा न मानने वाले (नास्तिक) लोग बड़ी संख्या में विद्यमान है।

अ) अस्तिक लोग - १. ईश्वर की सत्ता को मानने वाले व उसपर विश्वास रखने वाले लोग अज्ञान व अंधविश्वास के साथ ईश्वर को मानते हैं। यह ते एक तरह से ईश्वर से दूर जाना ही है। इनमें संसार के हिंदू, मुस्लिम, ईसाई पारसी आदि सभी आते हैं।

२. बहुत कम लोग ईश्वर के सही स्वरूप को जानते व मानते हैं। वे सृष्टि के पीछे काम करने वाली व कर्मफल देनेवाली शक्ति को अदृश्य, सर्वव्यापक व सर्वज्ञ के रूप में मानते हैं, वे ऋषि मुनियों व वेद के आधार पर अपना विचार व्यक्त करते हैं। इस श्रेणी के लोग आर्य समाज के अनुयायी हो सकते हैं।

३. ईश्वर के विषय में अज्ञानी लोगों के विचारों को मान्यता न देते हुए केवल निसर्ग के पीछे काम करने वाली जो एक दिव्य अदृश्य शक्ति है, उसपर विश्वास रखते हैं। वे ईश्वर की सत्ता को मानते नहीं, ऐसा समझने वाले आधुनिक विज्ञानवादी लोग है।

ब) नास्तिक लोग- १. ईश्वर को न मानने वाले नास्तिक लोग अधिक मात्रा में प्रतिक्रियावादी हैं। अज्ञानी व अंधविश्वासी लोगों ने ईश्वर का सत्यस्वरूप, उसका कार्य, उसकी उपासना, प्रार्थना आदि के नाम पर पाखंड रचाया तथा बलिप्रथा आदि मान्यताएँ प्रचलित की। ऐसी मान्यताओं को विचारवान लोगों ने मान्यता नहीं दी और ईश्वर को न मानने की धारणा सर्वत्र फैलायी।

२. अज्ञानी, अंधविश्वासी व कट्टरपंथी तथा हठी लोगों की गलतियाँ बताने पर अपनी गलतियाँ ठीक करने के बजाय तथा सत्य स्वीकारने के बजाय उन्हें ही नास्तिक व अनीश्वरवादी घोषित किया गया। इनमें बौद्ध, जैन, चार्वाक तथा आधुनिक विज्ञानवादी लोग सभी आते हैं।

इतना होने पर भी आज तक इन लोगों ने अपना दुराग्रह नहीं छोड़ा। आज भी ईश्वर के नाम पर ऐसे अनेकों मत मतांतर अधिक मात्रा में बढ़ रहे हैं। ईश्वर के अनेक नाम, अनेकों आकार–प्रकार तथा जो गुणकर्म बताये जाते हैं, क्या वे सही हैं? क्या ईश्वर यह शब्द वेद में हैं, तो क्या वह सृष्टि आज भी नही है? फिर ईश्वर का मानव मात्र के सुख से संबंध है या नहीं? यदि है, तो सच्चे ईश्वर से लाभ होगा अथवा झूठे ईश्वर से? क्या ईश्वर मनुष्य के जैसा ही अज्ञानी है?

परमात्मा के बारे में वेद, उपनिषद, दर्शन आदि सभी ग्रंथ यथार्थ ज्ञान देते हैं। वे एक ही सच्चे ईश्वर का पथ दर्शाते हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती ने भी एकही सत्य ईश्वर का प्रतिपादन कर उसके शुभ गुण व कर्म बतायें हैं। उन्होंने आर्य समाज के पहले और दूसरे नियम में ईश्वर के कार्य व स्वरूप को बताया है। पहले नियम में परमात्मा को सब सत्य विद्याओं का आदिमूल बताया है तथा दूसरे नियम में उसके सच्चिदानंद स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान आदि गुण स्पष्ट किये हैं।

सच्चा ईश्वर ही हमें सही अर्थों में सुख देनेवाला व सभी दुखों का निवारण करने वाला है। वह सभी को सत्यज्ञान देता है। सृष्टि के नियमों को भी वही बताता है और उन नियमों पर चलने का आदेश देता हैं। ईश्वर ही आत्मा को उसके साथ ही जुड़ने का मार्ग प्रशस्त करता है। यह प्रक्रिया आज भी निरंतर जारी है। फिर भी आज का मनुष्य अज्ञान के कारण सच्चे ईश्वर से दूर है। परमात्मा सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, सर्वव्यापक

शेष पृष्ठ ५ पर

पृष्ठ ४ का शेष

बढ़ते अज्ञान व अंधविश्वास का ...

होने से आत्मा में भी व्याप्त है, तो ऐसे ईश्वर को हम कहाँ ढूँढे? अंदर या बाहर? सृष्टि में या निसर्ग में जो कुछ भी हो रहा और आगे भी होता रहेगा। ऐसे सत्य को हम क्यों नहीं देखे? ईश्वर की जो व्यवस्था है, उसमें परोपकार, सबका कल्याण, न्याय व कर्मफल सिद्धांत निहित है। जैसा बीज होगा, वैसा ही वृक्ष दिखाई देगा। प्राणियों अथवा मनुष्यों के शरीरों को कौन निर्माण करता है, उसका संवर्धन व संरक्षण भी कौन करता है? जन्म–मृत्यु की व्यवस्था किसके हाथ में है। हमने जो भी खाया हुआ है, उस अन्न का रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, वीर्य इन सप्त धातुओं में कौन रुपांतरीत कर रहा है? और यह निर्माणकार्य किसलिए हो रहा है?

सृष्टि में सूर्य, चंद्र, हवा, पानी, अग्नि, वनस्पति, प्राणी आदियों का निर्माण किसने व क्यों किया है? सृष्टि का कण–कण– यही बताता है कि मनुष्य हो या अन्य प्राणी वे इन सभी सृष्टितत्त्वों का निर्माण नहीं कर सकते। दूसरी बात यह है कि सृष्टि के सभी तत्त्वों का कुछ न कुछ निश्चित उद्देश्य है। उसकी एक अखंडित व्यवस्था है। आत्मा के लिए ईश्वर ने यह सारा खेल रचाया है। आत्मकल्याण कर लेना यह आत्मा का ही कर्तव्य है। उसके लिए साधन–सामग्री और ज्ञान परमात्मा ने ही दे रखा है। साथ ही इन सबका उपयोग करने की स्वतंत्रता भी दे रखी है। किन्तु साथ ही शाश्वत न्याय भी उपलब्ध किया है। मनुष्य जैसा कर्म करेगा, वैसा ही उसे फल मिलेगा। अच्छे कर्म करेगा व साधनों का सदुपयोग करेगा तो सुख व आनंद मिलेगा और बुरे कर्म करेगा अथवा साधनों का दुरुपयोग करेगा, तो उसे दुःख भी उठाना पड़ेगा और बीमारियाँ व मृत्यु भी आयेगी। यह न्यायव्यवस्था सबके लिए एक जैसी और सार्वभौमिक है। इस व्यवस्था को कोई भी परिवर्तित नहीं कर सकता। गलतियाँ करने पर क्षमा भी नहीं होगी और दंड तो निश्चित ही मिलेगा। ईश्वर की व्यवस्था में किसी भी प्रकार की सिफारिशें नहीं चलती, वहाँ पर एजेन्सियाँ अथवा अन्य कार्यव्यापार भी नहीं चलता। हर बात के लिए स्वयं की आत्मा जिम्मेदार है।

आत्मा की इच्छा है– 'परमात्मा को प्राप्त करने की।' वह आनंद या तो ईश्वर गुणों को *धारण करने व आचरण* में लाने से ही मिलेगा! या तो प्रत्यक्ष ईश्वर के सान्निध्य में बैठने से प्राप्त होगा। परमात्मा का स्थान, मार्ग, यह सब कुछ निश्चित व शाश्वत है। गाढ निद्रावस्था में सिर्फ आत्मा व परमात्मा दोनों ही रहते हैं। वैसा ही जागृत अवस्था में शरीर, इन्द्रिय, मन, बुद्धि इन सभी को संयमित करके अंतर्मुख वृत्ति से हम आनंदमय कोष में प्रवेश कर सकते हैं। यहाँ पर भी किसी प्रकार का एजंट काम नहीं करता। उसके सान्निध्य में परमानंद या मोक्ष मिलता है। इसे प्राप्त करना आत्मा का ही काम है। अज्ञान, अंधःविश्वास के कारण ईश्वर के सच्चे स्वरूप, गुण, न्याय व्यवस्था, उद्देश्य, शाश्वत ज्ञान आदि बातों को बदलकर लोगों ने ईश्वर के नाम पर माफी, जडपूजा, एजन्सी, मक्तेदारी आदि बातें प्रचलित कर दी। आत्मा को परावलंबी बनाकर उसका शोषण करना आदि बातों से क्या सही अर्थों में सुख व आनंद मिलेगा? क्या इससे आत्मकल्याण होगा? जो लोग अज्ञान व अंधविश्वास में पड़कर दुराग्रह कर रहे हैं, ऐसे लोगों के जीवन का क्या कल्याण होगा? क्या उनकी आत्माएँ प्रसन्न होगी? आत्मा की इच्छा के अनुसार क्या उन्हें सुख मिलेगा? यह व्यवहार तो एक प्रकार से आत्महनन ही है।

राज्य किसी का भी क्यों न हो? चाहे वह हिंदुओं का या मुसलमानों का, ईसाईयों का हो या नास्तिकों का! यह महत्त्व की बात नहीं है। जीवन का सही अर्थों में कल्याण और आत्मकल्याण ही महत्त्वपूर्ण बात है। इसी तरह धर्म या जाति के बारे में हो या जीवन लक्ष्य, धर्मग्रन्थ अथवा सत्यज्ञान के विषय में हो, अथवा सुख–दुःख, नीति–न्याय आदि विषयों के बारे में क्यों न हो, सभी मत व पंथवादी तथा धार्मिक कहलानेवाले लोगों में अज्ञान, अंधविश्वास भरा पड़ा हुआ है। पहले वेद को जानने वाले विद्वान अधिकारियों ने शब्द वही रखे और अर्थ बदल दिये, साथ ही आचरण भी बदल दिये, सही अर्थों में बिगाड तो यहीं से शुरू हुआ है। दुनिया का सुधार चाहने वाले लोग पहले वेद की यथार्थ बातों को स्वीकार करें, वेद के शाश्वत सत्य को मानें और उसी के अनुसार अपना शुद्ध आचरण करे। तत्पश्चात् लोगों को एकमात्र वही वैदिक मार्ग बताए, तभी तो सारे संसार का कल्याण होगा, अन्यथा सर्वत्र दुःख ही दुःख बढ़ता जाएगा।

आज अज्ञान व अंधविश्वास के कारण चारों वेद व वेद के शब्द बदनाम हुए हैं। पाश्चात्य विद्वानों ने वेद को गडरियों के गीत बताये। साथ ही यहाँ के नास्तिक व आधुनिक कहलाने वाले सुधारकों ने भी वेदों की निंदा की। वैदिक तत्वज्ञान की ओर अनदेखी कर इसे मानने से इनकार किया व समाज को भी भ्रमित किया। किन्तु हमारा सौभाग्य कि, उन्नीवीं शताब्दी के महान युगपुरूष महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रबल पुरूषार्थ से हमें पुनःश्च शुद्ध रूप में वेदज्ञान उपलब्ध हुआ। उनकी कृपा से हमें वेदभाष्य प्राप्त हुए, जिनमें मानवजीवन व प्राणीमात्र के पूर्ण कल्याण के साथ ही आत्मकल्याण की बात वेदों द्वारा बताकर वेद की प्रतिष्ठा बढ़ाई है। स्वामी जी के वैदिक विचारों के बिना संसार का कल्याण कभी भी नहीं हो सकता। आईये हम सब मिलकर इन्हीं वैदिक विचारों द्वारा संसार से अज्ञान व अंध विश्वास को समाप्त कर अपने पूर्वजों की भाँति भारतवर्ष का गौरव बढ़ाये और विश्व में चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापन करे।

महर्षि दयानन्द प्रणित वेदज्ञान, सृष्टिक्रम (सृष्टिविज्ञान) और आर्ष ग्रन्थों के आधार ही हम संसार में शांति व सुख का वातावरण स्थापित कर सकते हैं क्योंकि इन्हीं वैदिक विवादों के द्वारा हम सार्वभौम तौर पर सर्वत्र एक ईश्वर, एक धर्मग्रंथ, एक मानवधर्म, एक ही मनुष्यजाति, एकही जीवन लक्ष्य, एक ही नीतिन्याय, एक ही कर्मफल व्यवस्था तथा एकही न्याय कर्मफल व्यवस्था तथा एक ही न्याय व्यवस्था का वातावरण बना सके हैं।

जीवन कलश

-विजय गुप्त- 'आशु कवि'

जीवन कलश ज्ञान से भर दीजिए
हे ईश उपकार इतना कर दीजिए
तेरे सत्य को देखूँ वो नजर दीजिए
तेरी महिमा को गाऊँ वो स्वर दीजिए
मेरा तन तेरी तान की वीणा बने
हर शब्द इक अनमोल नगीना बने
हर बून्द में चमक हो तेरे रूप की
बरसती घटाओं का ऐसा महीना बने
मुझे बाँसुरी बना, अधर अपने लगा
लेकिन उपकार इतना कर दीजिए....
छेद ही छेद है हमारे तनों में
भेद ही भेद हैं हमारे मनों में
अपार शक्ति तेरी सिमटी हुई
बिखरे हुए इन धूल कणों में
अपार शक्ति तेरी सिमटी हुई
बिखरे हुए इन धूल कणों में
मुझे ढोलक बना ताल अपनी लगा
उपकार इतना प्रभोवर कर दीजिए....
कहानी लिखी हुई बादलों पर तेरी
झंकार हमने सुनी बिजलियों से तेरी
फूल मुस्कान बिखेरे प्यार के
सुगंध सिमटी हुई कलियों में तेरी
मुझे घुंघरू बना, पांव से ठोकर लगा
पर उपकार इतना कर दीजिए
वेदों में तेरा तो प्रकाश है
उपनिषदों में तेरा विश्वास है
जो भी ग्रन्थ उठाऊँ सदज्ञान के
हर शब्द में तेरी ही आस है
मुझे शहनाई बना या ढोलक बना
हर ताल पर अपनी, थपकी लगा
चाहे घुंघरु बना के पांव से ठोकर लगा
हम पर उपकार इतना कर दीजिए
तेरी महिमा को गाऊँ वो स्वर दीजिए।

-: स्वास्थ्य चर्चा :-

नारियल पानी रखेगा रक्तचाप नियंत्रित– नारियल पानी में विटामिन–सी, पोटैशियम, मैग्नीशियम आदि पोषक तत्व होते हैं, जो स्वाभाविक रूप से शरीर के तापमान को संतुलित करते हैं। जिन लोगों को गर्मी आते ही उच्च रक्तचाप की समस्या हो जाती है, उनके लिए नारियल पानी बहुत अच्छा होता है। नारियल पानी शरीर को पर्याप्त नमी भी देता है।

खरबूजा देगा पेट को ठंडक– खरबूजे में ६५ प्रतिशत पानी के साथ–साथ विटामिन व मिनरल्स भी होते हैं। शरीर में पानी की कमी को दूर करने के लिए खरबूज का सेवन एक बेहतर विकल्प है। इसके बीज में प्रोटीन काफी मात्रा में होते हैं। खरबूजा खाने से पेट में जलन की समस्या दूर होती है।

गन्ने का रस देगा तुरंत ऊर्जा– गन्ने का रस पीने से तुरंत ऊर्जा मिलती है और कमजोरी दूर होती है। गन्ने के रस में भरपूर मात्रा में आयरन होता है, जिससे खून की कमी की समस्या दूर होती है। गन्ने का रस पीने से शरीर में नमी बनी रहती है। इसे पीने से ताजगी बनी रहती है और लू से भी बचाव होता है। ध्यान रखे, गन्ने का रस पीने से बुखार भी जल्दी उतर जाता है। ध्यान रखें, सफाई से निकला और ताजा रस ही पिएं, वरना इंफेक्शन भी हो सकता है।

एक मुट्ठी आटे में – वेद प्रचार

–डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की वेद प्रचार तथा शास्त्रार्थ किये, पत्र पत्रक, पुस्तकें लिखीं अन्ध विश्वास व पाखण्डों को दूरकरने के प्रयास किये। सत्यार्थ प्रकाश उनकी लिखी एक ऐसी पुस्तक है जिसने सोते हुए भारतीयों को जगा दिया और आज भी सबको प्रेरणा दे रही है। आर्य समाज विचारों की क्रान्ति का मंच है जहां वैदिक धर्म व भारतीय संस्कृति का प्रकाश जन–जन के हृदय में अन्धकार की छाया का प्रतिकार कर रहा है आर्य समाज की प्रेरणा से अनेक क्रान्तिकारी स्वतन्त्रता हेतु बलिवेदी पर न्यौछावर हो गये ऐसे अनेक वीर पुरुष हुए जिन्होंने वेद प्रचार हेतु अनेक यातनाएं सहीं दुःख उठाए कष्ट उठाए राष्ट्र निर्माण हेतु अपने गरीब परिवारों को छोड़ दिया फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा।

ऐसे ही पण्डित दौलतराम जो आगरा निवासी ब्राह्मण थे आर्य समाजी थे बच्चों को पढ़ाने व वेद प्रचार करने की अधिक लगन थी उनका अपना परिवार अत्यन्त निर्धन था अपना घर छोड़ वह झांसी पहुँच गए वहाँ पाठशाला व अनाथालय खोला जहाँ बिना कोई शुल्क लिए बच्चों को पढ़ाना आरम्भ कर दिया, इस हेतु वहां के निवासियों अनाथालय के संचालन हेतु प्रतिदिन एक मुष्टि आटा घड़े में डालना आरम्भ कर दिया पण्डित दौलतराम बच्चों को पढ़ाने का कोई शुल्क नहीं लेते थे उन्होंने रविवार को आर्य सामज के सत्संग का आयोजन भी आरम्भ कर दिया। यह देखकर छावनी के अनेक सैनिक भी सत्संग में आने लगे कुछ सैनिकों ने पण्डित दौलतराम से सैनिक छावनी में भी सत्संग करने की प्रार्थना की। वहां छावनी में पण्डित दौलत राम ने सत्यार्थ प्रकाश के ग्याहरवें समुल्लास की कथा की कुछ आर्य समाज के विरोधियों ने इसकी शिकायत छावनी के अधिकारियों से की। पुलिस ने पण्डित दौलत राम पर दफा १०८ का अभियोग चला दिया।

न्यायाधीश श्री जे.सी. स्मिथ थे उन्होंने २६.६.१६०८ को इस मामले में निर्णय करते हुए पण्डित दौलत राम को उत्तम व्यवहार के लिए झांसी के प्रतिष्ठित नागरिकों द्वारा नेक चलनी की दो जमानतें देने का अथवा एक वर्ष के कठोरतम कारावास का दण्ड दिया। न्यायाधीश का कहना था कि पंडित दौलत राम बच्चों से कोई शुल्क नहीं लेता अच्छे कपड़े पहनता है, उसने कुछ व्यक्तियों को इसलिए राजी किया है कि अपने घरों में रखें मटकों में प्रतिदिन एक मुट्ठी भर आटा डाल दिया करें उसके अनुसार प्रति सप्ताह तेतीस सेर आटा एकत्र हो उसे मिल जाता है।

झांसी के समाचार पत्रों ने जिला मजिस्ट्रिट स्मिथ के इस निर्णय की अत्यधिक आलोचना की थी। कहने का तात्पर्य यह है कि आर्य समाजी अपनी लगन व धुन के पक्के होते थे उन्होंने अपने घर परिवार की भी परवाह नहीं की वह संसार की भलाई के लिए ही जीए परोपकार के लिए यातनाएं सही जेल गए आर्य समाज का कार्य संसार के उपकारार्थ ही तो है। सत्यासत्य के निर्णय के लिए है, सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाश के लिए है। उनसे प्रेरणा लें आज तो हम स्वतन्त्र हैं वह कठिन परिस्थितियां भी नहीं हैं। प्रचार कार्य और तीव्र करें।

ओ३म्

महर्षि दयानन्द गुरुकुल पूठ महाविद्यालय गढ़मुक्तेश्वर, हापुड

उ.प्र. में प्रवेश प्रारम्भ

गढ़मुक्तेश्वर गंगा किनारे प्राचीन तीर्थ गुरुद्रोणाचार्य की तपस्थली गुरूकुल पूठ में नवीन सत्र के प्रवेश प्रारम्भ हो रहे हैं। शान्त एकान्त वातावरण में न्यूनतम कक्षा ५ उत्तीर्ण छात्रों का प्रवेश होगा ६, ७ एवं ८ उत्तीर्ण भी प्रवेश होगें प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर ही मान्य होगा शीघ्रता करें उ०प्र० मा०सं०शि० परिषद् लखनऊ से मान्यता है शिक्षा आर्य वीर दल का प्रशिक्षण भी होता है। शिक्षा निःशुल्क है मात्र छात्रावास व्यय ही लिया जायेगा।

दिनेश, आचार्य ९४११०२९७७५ | राजीव, प्राचार्य ९४१०६३८४४४ | स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती संचालक, मो. ९८३७४०२१९२

सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 2 जून से 16 जून 2019

स्थान :गुरूकुल शिवालिक अलियासपुर अम्बाला (हरियाणा)

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के अध्यक्ष डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती जी की अध्यक्षता आर्य वीर दल के अध्यक्ष डॉ० स्वामी देवव्रत सरस्वती जी की अध्यक्षता में शाखानायक, उप व्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी का शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण हेतु राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

प्रवेश शुल्क : शाखानायक : ५००/- रूपये, उप व्यायाम शिक्षक एवं व्यायाम शिक्षक के लिए ६००/- रूपये है (पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी) विस्तृत जानकारी के लिए संयोजक श्री रविन्द्र सिंह ९९९१७०००३४ से सम्पर्क करें।

-सत्यवीर आर्य, प्रधान संचालक, ९४१४७८९४६१

निर्वाचन आर्य समाज तेलियाबाग, गोसाईगंज, अयोध्या

आर्य समाज तेलियागढ़, गोसाईगंज, अयोध्या (फैजाबाद) का निर्वाचन दिनांक १०.०१.२०१९ को सम्पन्न हुआ, जिसमें सर्वश्री शेषप्रकाश आर्य-प्रधान, पुरुषोत्तम दास-मन्त्री एवं अजय प्रकाश शर्मा- कोषाध्यक्ष के साथ अन्य पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य निर्वाचित हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ की ओर से मान्यता प्रदान की जाती है। आर्य समाज तेलियागढ़, गोसाईगंज, अयोध्या (फैजाबाद) के ये ही विधिमान्य पदाधिकारी हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ की ओर से उपरोक्त पदाधिकारियों को संयुक्त हस्ताक्षरों से खाता खोलने एवं संचालित किये जाने हेतु अधिकृत किये जाते हैं। -स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

आर्य समाज सुमेरगंज बराबंकी का वार्षिकोत्सव

24, 25, 26 मई से

भजनोपदेशक- बहन यशोदा जी- बदायूं

विमलदेव जी बरेली स्थानीय विद्वान,

पं. रामनरायण शास्त्री, हरीश कुमार शास्त्री (लखनऊ)

उक्त कार्यक्रम में आप सादर आमंत्रित हैं

निवेदक - दयाशंकर आर्य प्रधान, सुमेरगंज, बाराबंकी

आर्यवीर/वीरांगना योग एवं चरित्र निर्माण शिविर

आयोजक : जिला आर्य प्रतिनिधि सभा बागपत

शिविर पंजीकरण शुल्क रूपये 200/-

आर्य वीर शिविर

३० मई से ०६ जून २०१९

शिविर में क्या लायें- दो सैन्डो सफेद बनियान, सफेद जूते, सफेद जुराब, सफेद शर्ट, या टी-शर्ट, खाकी नेकर, मच्छरदानी, टॉर्च, तेल, साबुन, मंजन, ओढ़ने व बिछाने की चादर कॉपी, पेन व दैनिक प्रयोग की वस्तुऐं।

आर्य वीरांगना शिविर

१६ जून से २३ जून २०१९

शिविर में क्या लायें- सफेद सूट-सलवार, नारंगी चुन्नी, सफेद जूते, सफेद जुराब, मच्छरदानी, टॉर्च, तेल, साबुन, मंजन, ओढ़ने व बिछाने की चादर कॉपी, पेन व दैनिक प्रयोग की वस्तुऐं।

शिविर स्थल- जनता वैदिक इण्टर कालेज, बड़ौत

सम्पर्क सूत्र - 9411260449, 9557497133, 9412421733, 9868214742

शोक संदेश

आर्य समाज सिंहपुर सानी जिला सम्भल के संरक्षक क्षेत्रीय सहकारी संघ के संचालक चौ० भगवन्त सिंह जी का देहावसान अपूरणीय क्षति है आपके कार्यकाल में राजनीति-धर्मनीति एक साथ बैठकर राष्ट्रोन्नति के लिए संकल्पित रही हैं। सामाजिक चेतना के लिए आपका जीवन समर्पित रहा है आपकी छत्रछाया में पूरे क्षेत्र का संगठन एक झण्डे के नीचे रहा है आपकी श्रद्धांजली सभा में सभी राजनीति के पुरोधा सभी वर्गों के प्रतिनिधि तथा क्षेत्रीय जनता भारी संख्या में उपस्थित रही। सभामंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने भी परिवार में पहुंचकर शान्ति यज्ञ में भाग लिया और परिवार के धैर्य के लिए प्रार्थना की। —रणजीत सिंह आर्य, अध्यक्ष वेदप्रचार

शोक सभा एवं शान्ति यज्ञ

आर्य समाज पिलखुआ हापुड़ के पूर्व मन्त्री एवं जिला आर्य प्रतिनधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री रवीन्द्र उत्साही के पूज्य पिता श्री रामौतार आर्य जी का स्वर्गवास हो गया है उनका शान्ति यज्ञ श्री गौरव शास्त्री ने सम्पन्न कराया शोक सभा में जिला सभा हापुड़ के प्रधान बाबू सुरेन्द्र सिंह जी पूर्व प्रधान विकास आर्य पूर्व मन्त्री अशोक आर्य मन्त्री सुन्दर लाल आर्य, प्रदेश प्रतिनिधि ज्ञानेन्द्र चौधरी, वीरेन्द्र आर्य, रघुवीर सिंह आर्य, सुभाष आर्य, विजय आर्य, प्रेमचन्द्र आर्य सभामन्त्री स्वमी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने भी पहुँचकर शोक संतृप्त परिवार को सान्त्वना प्रदान की तथा परिवार में धैर्य धारण करने की प्रभु से प्रार्थना की कार्यक्रम में आर्य वीरदल एवं आर्य समाज पिलखुवा के सभी सदस्य एवं अधिकारी उपस्थित रहे। —अशोक कुमार आर्य, उप प्रधान जिला सभा, हापुड़

शोक श्रद्धांजली

आर्य समाज गन्दूनंगला के उपप्रधान ठेकेदार यशवीर सिंह आर्य जी का देहावसान लम्बी बीमारी के बाद हो गया उनका शान्तियज्ञ समाज के मन्त्री आचार्य रामकुमार शास्त्री जी ने सम्पन्न कराया ८ मई बुधवार को मध्याह्न शोक श्रद्धांजली का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें क्षेत्र के सभी सम्भ्रान्त लोगों ने भाग लेकर श्रद्धांजली दी सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने परिवार को सान्त्वना प्रदान करते हुए प्रभु से धैर्य की प्रार्थना की क्षेत्रीय विधायक सांसद प्रतिनिधि के अतिरिक्त आर्य समाजों के प्रतिनिधि भारतीय किसान यूनियन के अधिकारी तथा क्षेत्रीय शिक्षकों न भी आकर श्रद्धांजली दीं।

—प्रदीप शास्त्री, गुरूकुल पूठ

शोक संवेदना

आर्य समाज बगहा मिर्जापुर के पूर्व प्रधान ज्वाला प्रसाद सिंह का आकस्मिक निधन दिनांक २७.०४.२०१९ को हो गया उनके निधन के समाचार सुनकर आर्य जनों में शोक लहर छा गया ज्वाला प्रसाद जी का निधन आर्य समाज की अपूर्णिय क्षति है हम आर्य मित्र परिवार ईश्वर से प्रार्थना करते है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें और परिवारी जनों को यह असहनीय दुःख सहन करने की क्षमता प्रदान करें। —हरीश कुमार शास्त्री, कार्यकारी संपादक, आर्य मित्र

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूरभाष : ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०९४१२७४४३४१, मंत्री- ०९८३७४०२१९२, व्यवस्थापक- ९३२०९२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com ई-मेल आर्य मित्र aryamitrasaptahik@gmail.com

सेवा

आर्य समाज के विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ

आर्य समाज पंखा रोड, सी ब्लाक जानकीपुरम दिल्ली के वार्षिक उत्सव से लिया गया छायाचित्र

आर्य समाज शास्त्री नगर मेरठ, का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज शास्त्री डी ब्लॉक मेरठ के वार्षिकोत्सव से लिया गया छायाचित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य प्रतिनिधि सभा गौतमबुद्ध नगर
आर्य समाज ग्रेटर नोएडा
के तत्वावधान में
विशाल योग शिविर
के आयोजन में आप सादर आमंत्रित है।
दिनांक: 04 जून मंगलवार से 09 जून रविवार 2019 तक
योग गुरु स्वामी कर्मवीर जी महाराज
9818084674, 9818664888, 9810728821, 9311842778, 9910354220, 9899257670

ओ३म्

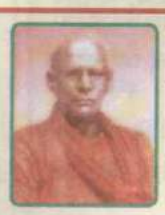

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

के तत्वावधान में

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी के सानिध्य में

दिनांक ०७, ०८, ०९, १० जून २०१९ दिन- शुक्रवार, शनिवार, रविवार, सोमवार तक **"बृहद् योग शिविर का आयोजन"** किया जा रहा है तथा दिनांक **09.06.2019 रविवार** को आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों की अन्तरंग सभा की बैठक पूर्वाह्न ११.०० बजे से प्रारम्भ होगी जिसमें आप सादर आमंत्रित हैं

कृपया ईष्ट मित्रों सहित शिविर में भाग लेकर योग, भजन प्रवचन का लाभ उठायें।

स्थान- महात्मानारायण स्वामी आश्रम, रामगढ़ तल्ला, नैनीताल (उ०ख०)

डा. धीरज सिंह
प्रधान

अरविन्द कुमार
कोषाध्यक्ष

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री

नोट : योग शिविर में आने वाले महानुभावों से निवेदन है कि मौसम के अनुकूल हेतु वस्त्र और कम्बल अवश्य साथ लायें।

काशी शास्त्रार्थ सम्मेलन

दिनांक 11, 12 एवं 13 अक्टूबर 2019 से

आपको जानकर हर्ष होगा कि दिनांक ११, १२ एवं १३ अक्टूबर २०१९ को वाराणसी में अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन के रूप में वृहद अयोजन है आप अभी से आने का संकल्प कर लें तथा प्रदेश की आर्य समाजें इन तिथियों में कोई भी कार्यक्रम न रक्खें आप सभी महानुभाव से निवेदन है कि अपने ईष्ट मित्रों सहित महासम्मेलन में भाग लेकर सम्मेलन को सफल बनायें।

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।